सुथरा सम्प्रदाय गुरु गद्दी परम्परा

श्री गुरु परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। अनगिनत ऋषि, मुनि और योगी हुए हैं जो महान शक्तिशाली थे। उनकी परम्परा आज भी जीवित है। गुरु जब भी अपना उत्तराधिकारी चुनते हैं तो गुरु के हृदय में जो कुछ भी है वे उसके हृदय में प्रेषित कर देते हैं। जैसे महर्षि धौम्य ने आरुणी को, इन्द्र ने अर्जुन को, शुक्राचार्य ने कच को इसी तरह शक्तियाँ प्रदान की। सिद्ध गुरुओं द्वारा यह परम्पराएँ अब भी प्रचलित हैं। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी पर, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त पर, रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द पर, गुरु जनार्दन स्वामी ने एकनाथ महाराज पर अपने जीवन काल में ही पूर्ण अनुग्रह किया था। इसी तरह से गुरु नानक देव जी की शक्तियाँ गुरु अंगद देव जी में समाहित होकर गुरु गोबिन्द सिंह जी तक जा पहुँची। गुरु बहुकाल तक शिष्य को पूर्णरुपेण तैयार करते हैं। अनेक रूपों में उनकी परिक्षाएँ लेकर उन्हें सर्वदोष से मुक्त कर देते हैं।

वैसे तो गुरु के सहस्त्रों शिष्य होते हैं जिन पर गुरु अपनी कृपा दृष्टि रखते हैं। किन्तु उन अनेकों शिष्यों या भक्तों में तथा उस एक शिष्य में अन्तर होता है जिसे वे अपना उत्तराधिकारी चुनते हैं। यह प्रक्रिया बड़ी गूढ़ है। ऐसा नहीं कि गुरु किसी विशेष शिष्य के प्रति पक्षपात करते हैं किन्तु गुरु के उस मुख्य शिष्य को कुछ विशेष रूप से अपनी लगन, साधना एवं अभ्यासों द्वारा स्वयं को योग्य बनाना होता है। वास्तव में भावी सद्गुरु के लिए कठिन परीक्षण अनिवार्य है। ऐसा शिष्य अपने सद्गुरु से सतत् एकात्मक स्थिति में रहता है। जब वह शिष्य अग्नितप्त स्वर्ण की भान्ति सभी दोषों से मुक्त हो जाता है तब इसे गुरु पद पर आसीन किया जाता है। गुरुओं की यहीं मुख्य विशेषता होती है कि वह दिव्य शक्ति के सम्प्रेषण द्वारा शिष्य में अपनी प्राण शक्ति के संचरण द्वारा उसकी प्रसुप्त शक्ति को जगा देते है यही प्रक्रिया अध्यात्म शास्त्रों में शक्तिपात के नाम से जानी

जाती है। संत ज्ञानेश्वर ने अपनी अनुपम कृति ज्ञानेश्वरी में शक्तिपात के संबंध में कहा है - 'यह दृष्टि जिस व्यक्ति पर चमकती है या इस शक्ति से संयुक्त हाथ जिसका स्पर्श करता है वह जीव होते हुए भी महेश्वर श्री शंकर भगवान की समता प्राप्त कर लेता है।'

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

यह ब्रह्माण्ड पूर्ण है यह विश्व पूर्ण है पूर्ण में से पूर्ण का प्रादुर्भाव होता है। (पूर्ण ब्रह्म से पूर्ण लेके इस सृष्टि का निर्माण हुआ है) पूर्ण में से पूर्ण लेने के पश्चात भी पूर्ण ही शेष रहता है। जिस प्रकार बहुत फैलने वाले बड़े-बड़े वृक्षों का विकास एक छोटे बीज से होता है यानि सूक्ष्म बीज ही महान वृक्ष के रूप में विकसित होता है अर्थात् व्यापक वृक्ष में मूलभूत सूक्ष्म बीज है। बीज से प्रतिबीज अपने पूर्ण रूप में ही उदित होता है, आगे उगने वाले बीज में भी वही हैं जो पहले उगा था। इसी प्रकार मानवों के सभी आत्मा परब्रह्म परमेश्वर के ही पूर्ण अंश है। उस परमेश्वर को गुण, कर्म, स्वभाव से अनेको नामों से पुकारा जाता है। उन्हीं नामों में से एक नाम ज्योति स्वरूप भी है। संत-महात्मा भक्ति, योग शक्ति से उस ज्योति को प्रकट कर उस ज्योति स्वरूप के दर्शन करके उसमें विलीन होकर स्वयं ही ज्योति स्वरूप हो जाते हैं। यह ज्योति नानक, कबीर, जलज्योति शाह जी महाराज आदि के रूपों में प्रकट हुई। इसी ज्योति ने अलग-अलग स्वरूपों में प्रकट होकर अनेक दिव्य आत्माओं को प्रकाशित किया। जैसे यह ज्योति जब श्री गुरु नानक देव जी में प्रकट हुई तो गुरु गोबिन्द सिंह जी तक पहुंची।

यही ज्योति का स्वरूप ज्योतिपुंज सुथरा सम्प्रदाय गुरु प्रणाली के प्रथम महान संत श्री बाबा जलज्योति शाह जी महाराज हैं। बाबा रज्जाल शाह जी, बाबा निहाल शाह जी ने योग द्वारा इस ज्योति को प्रकट किया (यहाँ पाठकों को यह बता देना आवश्यक है कि बाबा श्री जलज्योति शाह जी

महाराज तथा श्री रज्जाल शाह जी महाराज अपनी जीवनलीला जगत को दिखाकर तथा अपने संकल्प पूरे कर भगवत् धाम को सशरीर प्राप्त हुए।) इसी ज्योति को बाबा झैंगड़ शाह जी तथा बाबा कंगाल शाह जी तक पहुँचाया। बाबा झैंगड़ शाह जी महाराज ने इस ज्योति को बाबा मुश्ताक शाह जी तक पहुँचाया। क्रमशः यही ज्योति इन महापुरुषों द्वारा अनेक महापुरुषों तक पहुँची, जिनका विवरण निम्नानुसार है: -

१. श्री बाबा जल ज्योति शाह जी महाराज
२. श्री बाबा रज्जाल शाह जी महाराज
३. श्री बाबा झैंगड़ शाह जी महाराज
४. श्री बाबा मुश्ताक शाह जी महाराज
५. श्री बाबा दीदार शाह जी महाराज
६. श्री बाबा कर्ण शाह जी महाराज
७. श्री बाबा झिंगड़ी शाह जी महाराज
८. श्री बाबा स्नान शाह जी महाराज
९. श्री बाबा गड़वे शाह जी महाराज
१०. श्री बाबा विश्वे शाह जी महाराज
११. श्री बाबा जूड़ी शाह जी महाराज
१२. श्री बाबा गणपत शाह जी महाराज
१३. श्री बाबा पतासे शाह जी महाराज
१४. श्री बाबा रुड़की शाह जी महाराज
१५. श्री बाबा गोपाल शाह जी महाराज
१६. श्री बाबा निशपाल शाह जी महाराज
१७. श्री बाबा हरपाल शाह जी महाराज
१८. श्री बाबा सोहन शाह जी महाराज
१९. श्री बाबा विवेक शाह जी महाराज

(वर्तमान गद्दी नशीन)